Toppersnotes®
Unleash the topper in you

BPSC

Prelims & Mains

बिहार संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर I – भाग – 1

भारत और बिहार का प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

BPSC

पेपर 1 भाग 1

भारत और बिहार का प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत** • पुरातत्व स्रोत • साहित्यिक स्रोत • बिहार इतिहास के स्त्रोत	1
2.	**पाषाण युग** • पुरापाषाण काल (पुरापाषाण युग) • मध्यपाषाण काल (मध्यपाषाण युग) • नवपाषाण काल (नवपाषाण युग) • ताम्रपाषाण काल (3500 ई.पू.-1000 ई.पू.) • बिहार में पूर्व इतिहास	7
3.	**सिन्धु घाटी सभ्यता** • सिंधु घाटी सभ्यता की खोज • भौगोलिक विस्तार • हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल • सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएं	14
4.	**वैदिक युग (1500-600 ईसा पूर्व)** • वैदिक साहित्य • प्रारंभिक/ ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व) • उत्तर वैदिक काल (1000-600 ईसा पूर्व)	19
5.	**जैन धर्म और बौद्ध धर्म** • बौद्ध धर्म • बौद्ध संघ • बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण पहलू • बौद्ध धर्म को शाही संरक्षण • विहित साहित्य • जैन धर्म • जैन संघ • जैन तीर्थंकर • जैन वास्तुकला • जैन धर्म को शाही संरक्षण • जैन धर्म के पतन के कारण • जैन धर्म बनाम बौद्ध धर्म • जैन धर्म और बौद्ध धर्म के बीच समानताएँ	23
6.	**बिहार और महाजनपद (600-300 ईसा पूर्व)** • अंग • वज्जि	37

- मगध
- मगध का उदय
- बृहद्रथ राजवंश
- हर्यंक राजवंश (545-412 ईसा पूर्व)
- शिशुनाग राजवंश (413 ईसा पूर्व से 345 ईसा पूर्व)
- नंद राजवंश (345-321 ईसा पूर्व)
- महाजनपद के युग में सामाजिक और भौतिक जीवन
- विदेशी आक्रमण

7. मौर्य सम्राजय **48**

- मौर्य साम्राज्य के स्रोत
- मौर्य वंश
- मौर्योत्तर: 232 ईसा पूर्व- 185 ईसा पूर्व
- मौर्य प्रशासन
- राजनीतिक इकाइयाँ
- मौर्य अर्थव्यवस्था
- समाज
- कला और वास्तुकला

8. मौर्योत्तर काल **61**

- मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण
- इंडो-यूनानी/बैक्ट्रियन ग्रीक
- शक/सीथियन
- सीथो-पार्थियन/ शक पहलव
- कुषाण या यूचिस या तोचरियन
- शुंग (185-73 ईसा पूर्व)
- कण्व (72 ईसा पूर्व - 28 ईसा पूर्व)
- सातवाहन (60 ई.पू.- 225 ई.)
- कलिंग का चेती/चेदी वंश (पहली शताब्दी ईसा पूर्व)

9. संगम युग **69**

- संगम युग के महत्वपूर्ण राज्य
- संगम युग के दौरान का जीवन
- संगम साहित्य

10. गुप्त काल **73**

- गुप्त साम्राज्य के शासक
- गुप्त प्रशासन
- गुप्त कला और वास्तुकला
- गुप्त साम्राज्य का पतन

11. गुप्तोत्तर काल **81**

- मैत्रकासी
- मौखरिस
- अभिरा वंश
- गौदास
- हूण

- पुष्यभूति राजवंश
- दक्षिण भारत और पूर्वी भारत के शासक राजवंश

12. पूर्व मध्यकालीन भारत (750-1200 ईस्वी) **89**
- गुर्जर-प्रतिहार (8वीं - 11वीं शताब्दी)
- बंगाल के पाल (8वीं - 12वीं शताब्दी)
- राष्ट्रकूट (8वीं - 10वीं शताब्दी)
- त्रिपुरियों की चेदि (कलचुरी)
- बंगाल की सेना
- पश्चिमी गंगा
- पूर्वी गंगा
- कश्मीर का इतिहास

13. चोल साम्राज्य (850-1200 ईस्वी) **107**
- राजनीतिक इतिहास
- प्रशासनिक संरचना
- कला और वास्तुकला
- अर्थव्यवस्था
- समाज
- धर्म
- सेना
- कल्याणी के चालुक्य
- चोल-चालुक्य युद्ध
- चोल साम्राज्य का अंत

14. संघर्ष की आयु (1000-1200 ईस्वी) **116**
- देवगिरी के यादव
- वारंगल के काकतीय
- द्वारसमुद्र के होयसल
- राजपूत राज्य

15. दिल्ली सल्तनत **122**
- गुलाम/इलबारी राजवंश (1206-1290)
- खिलजी वंश (1290-1320)
- तुगलक वंश (1320-1413)
- सैय्यद वंश (1414-51)
- लोधी वंश (1451-1526)
- दिल्ली सल्तनत के तहत प्रशासन, आर्थिक और सामाजिक जीवन

16. विजयनगर और बहमनी साम्राज्य **137**
- विजयनगर साम्राज्य (1336-1672)
- विजयनगर के बारे में विदेशी यात्री
- बहमनी सल्तनत (1347-1527 ई.)
- दक्कन सल्तनत

17. मुगल साम्राज्य **149**
- सम्राट
- सुर साम्राज्य (1540-1555 ई.)
- उत्तर और मध्य भारत
- पूर्वी भारत
- उत्तर- पश्चिमी भारत

- दक्कन और दक्षिण भारत
- मुगल साम्राज्य का पतन
- पटना कलम पेंटिंग्स

18. मराठा साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय राज्य **166**

- मराठों का उदय
- शाहजी भोंसले
- शिवाजी राजे भोंसले (1674-1680)
- संभाजी (1681-1689)
- राजाराम (1689-1707)
- साहू (1708-1749)
- राजाराम द्वितीय/रामराजा (1749-1777)
- पेशवा(1640-1818)

19. मध्यकाल में धार्मिक आंदोलन **179**

- मध्यकालीन भारत में दर्शन
- भक्ति आंदोलन
- सूफीवाद
- सिख धर्म
- भारत के लिए महत्वपूर्ण विदेशी यात्री

20. बिहार की कला और संस्कृति **195**

- बिहार में लोक संगीत
- बिहार के लोक नृत्य
- लोक नाटक
- महत्वपूर्ण मेले
- बिहार के त्यौहार
- बिहार के सांस्कृतिक क्षेत्र

1
CHAPTER

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

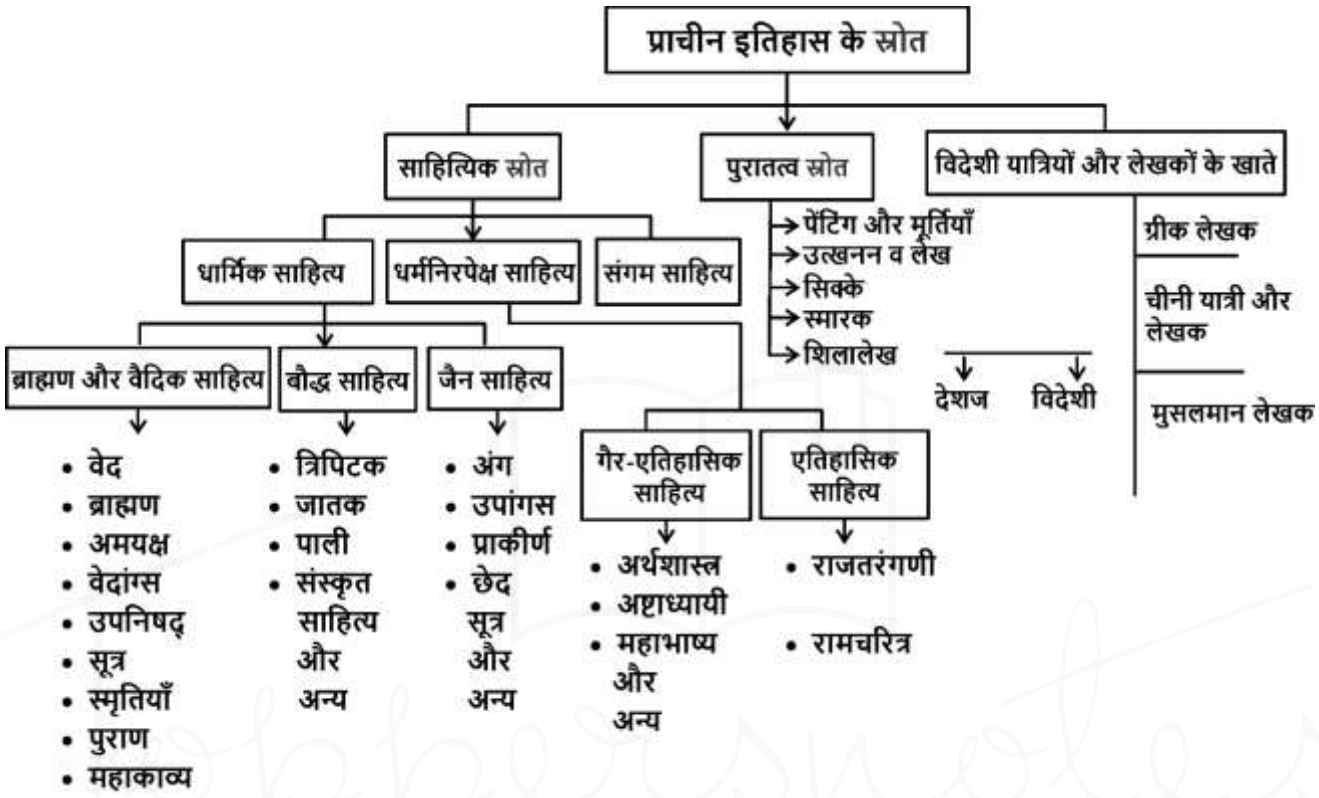

पुरातत्व स्रोत

मुद्राशास्त्र - सिक्कों का अध्ययन।

- **एपिग्राफी- अभिलेखों का अध्ययन।**
- **पुरातत्व = 'आर्कियोस' + 'लोगिया' (आर्कियोस = प्राचीन और लोगिया = ज्ञान)।**

1. **शिलालेख / अभिलेख / आदेश** -
   - सबसे पुराने शिलालेख - सम्राट अशोक- प्रमुख रूप से ब्राह्मी लिपि में।

अन्य महत्वपूर्ण शिलालेख:**नाम**	**खोज**	**विवरण**
नागनिका का शिलालेख	नानेघाट, महाराष्ट्र	सातवाहन राजा शातकर्णी प्रथम की कृतियाँ
नासिक शिलालेख	नासिक गुफाएँ, महाराष्ट्र	गौतमीपुत्र शातकर्णी
प्रयाग प्रशस्ति/इलाहाबाद स्तंभ	इलाहाबाद, UP	समुद्रगुप्त के बारे में; हरिषेण द्वारा संस्कृत में लिखा गया।
ऐहोल शिलालेख	कर्नाटक	बादामी के चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय से सम्बंधित, रविकीर्ति द्वारा रचित।
हाथीगुम्फा शिलालेख	उदयगिरि, उड़ीसा	राजा खारवेल से सम्बंधित

2. ताम्र-पत्र -

- 'भूमि-अनुदान' के लिए उत्कीर्ण और अनुदानग्राही को प्रदान किए गए।
- ताँबे की 3 प्लेटें, ताँबे की गाँठ के माध्यम से एक दूसरे से बंधी हुई।
- ऊपरी और अंतिम भागों को उकेरा नहीं गया है क्योंकि ये समय के साथ धुंधले हो सकते थे।
- उस काल की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जानकारी प्रदान करता है।
- उदा. सोहगौरा-कॉपर प्लेट हमें गंभीर सूखे और भोजन की कमी की समस्या से निपटने के लिए अधिकारियों द्वारा किए गए उपायों के बारे में सूचित करती है।

3. सिक्के -

- व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों, और आर्थिक और तकनीकी विकास के बारे में जानकारी मिलती है।
- उल्लिखित तिथियाँ हमें राजाओं के कालक्रम के बारे में जानने में मदद करती हैं।
- भारत का पहला सिक्का - पंचिंग की विधि से बनाए गए 'पंचमार्क(आहत) सिक्के' ।
- संभवतः व्यापारिक संघों द्वारा पेश किया गया था न की किसी शासक द्वारा।
- सिक्कों में शुद्धता का अनुपात शासक और उसके काल की आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी देता है।
- पहला सोने का सिक्का - इंडो-यूनानियों द्वारा जारी किया गया।
- कुषाणों द्वारा शुद्धतम सोने के सिक्के जारी किए गए।
- अधिकतम संख्या में सोने के सिक्के गुप्त काल से प्राप्त हुए लेकिन उसमें शुद्धता की कमी थी।

4. स्मारक

- अध्ययन हमें उस समय के तकनीकी कौशल, जीवन स्तर, आर्थिक स्थिति और स्थापत्य शैली की व्याख्या करने में मदद करता है।
- एक शासक या राजवंश की समृद्धि का चित्रण करता है।
- 3 प्रमुख शैलियाँ -
  - उत्तर में नागर शैली।
  - दक्षिण में द्रविड़ शैली।
  - दक्कन में वेसर शैली।

5. मूर्ति -

- हड़प्पा की मूर्तियाँ- पत्थर, स्टीटाइट, मिट्टी, टेराकोटा, चूना, कांस्य, हाथी दाँत, लकड़ी आदि से निर्मित मूर्तियाँ, खिलौनों, मनोरंजन के साधन का उपयोग।
- कांस्य प्रतिमाएँ (हड़प्पा सभ्यता) और खिलौने (दैमाबाद)।
- मौर्यकालीन मूर्तियाँ - दीदारगंज की यक्षी - लोगों की समसामयिक संपन्नता और सौन्दर्य बोध।
- कनिष्क की मूर्ति- राजा की विदेशी उत्पत्ति और विदेशी शैली की पोशाक, जैसे - ऊँचे जूते, ओवरकोट आदि।

6. चित्र

- चित्रों के प्रारंभिक उदाहरण- भीमबेटका (मध्य प्रदेश) - मध्य पाषाण काल के गुफा-निवासियों द्वारा आसपास की प्रकृति के रंगों और औजारों का उपयोग करके बनाए गए।
- अजंता पेंटिंग- धार्मिक विचारधारा, आध्यात्मिक शांति, आभूषण, वेशभूषा, विदेशी आगंतुकों आदि के बारे में जानकारी।
- चोल चित्रकला - चोल राज्य व्यवस्था के 'दिव्य राजत्व' की अवधारणा को प्रदर्शित करती है।

5. पुरातत्व अवशेष

(i) **मिट्टी के बर्तन**

- आद्य-इतिहास से प्रारंभिक मध्यकालीन काल तक के आधार उपकरण।
- इसमें विभिन्न वस्तुएँ शामिल हैं - जैसे, कटोरे, प्लेट, बर्तन आदि।
- संबंधित संस्कृति, आकार, कपड़े, सतह-प्रक्रिया (कपड़े, रंग, डिजाइन, पेंटिंग), मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीक आदि के अनुसार अलग-अलग रूपों में पाए गए ।
- विशिष्ट मिट्टी के बर्तनों का प्रकार विशेष संस्कृति/अवधि से सम्बंधित है।

(ii) **मनका**

- विभिन्न सामग्रियों से बना, जैसे, पत्थर, अर्ध-कीमती पत्थर (जैसे एगेट, कैल्सेडनी, क्रिस्टल, फ़िरोज़ा, लैपिस-लाजुली), काँच, धातु जैसे - सोना, ताँबा, टेराकोटा, हाथी दाँत, शैल आदि।
- विभिन्न आकार जैसे - गोल, चौकोर, बेलनाकार, बैरल के आकार का आदि।
- इनका इस्तेमाल एक विशिष्ट अवधि के तकनीकी विकास और सौंदर्यबोध को जानने के लिए एक स्रोत के रूप में किया जा सकता है।

(iii) **जीव अवशेष/हड्डियाँ**

- उत्खनन से बड़ी मात्रा में हड्डियाँ या जीवों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- आसपास के ऐतिहासिक पारिस्थितिकी या उस विशेष स्थल के पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- संबंधित लोगों की आहार संबंधी आदतों को समझने में मदद करता है।

(iv) **वनस्पति अवशेष**

- संबंधित लोगों की ऐतिहासिक पारिस्थितिकी और आहार संबंधी आदतों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

साहित्यिक स्रोत

1. धार्मिक स्रोत

- आधार स्रोत - ब्राह्मण ग्रंथ जैसे वैदिक ग्रंथ, सूत्र, स्मृति, पुराण और महाकाव्य।

वैदिक ग्रंथ	• ऋग्वेद- सबसे पुराना - ऋग्वैदिक समाज के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। • सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद - उत्तर वैदिक काल के समाज के बारे में जानकारी। • 900 वर्षों का इतिहास (1500B.C-600B.C)। • आर्यों की उत्पत्ति, उनकी राजनीतिक संरचना, समाज, आर्थिक गतिविधियाँ, धार्मिक दृष्टिकोण, संस्कृति आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
सूत्र	• मोतियों की तरह सुन्दर ढंग से सूत्र में पिरोए गए शब्द या स्तोत्र। • वैदिक काल की जानकारी प्राप्त होती है। • छह भाग - शिक्षा, व्याकरण, छंद, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष।
उपवेद	• आयुर्वेद - चिकित्सा विज्ञान से संबंधित - ऋग्वेद का उपवेद। • गंधर्व वेद- संगीत से संबंधित- सामवेद का उपवेद। • धनुर्वेद- युद्ध कौशल, हथियार और गोला-बारूद से संबंधित- यजुर्वेद का उपवेद। • शिल्प वेद- कला मूर्तिकला और वास्तुकला से संबंधित - अथर्ववेद का उपवेद।
स्मृति ग्रंथ	• मनुस्मृति - सबसे पुराना स्मृति पाठ (200B.C- 200A.D)। • याज्ञवल्क्य स्मृति - 100 A.D से 300 A.D के बीच संकलित। • नारद स्मृति (300A.D-400A.D) और पाराशर स्मृति (300A.D-500A.D) - गुप्तों की सामाजिक और धार्मिक स्थितियाँ।
पुराण	• स्मृतियों के बाद संकलित, इनकी संख्या 18 है। • मार्कंडेय पुराण, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण और मत्स्य पुराण - प्राचीन पुराण है। • मत्स्य, वायु और विष्णु पुराणों में प्राचीन भारतीय राजवंशों की जानकारी। • महाभारत के युद्ध के बाद शासन करने वाले राजवंशों का एकमात्र उपलब्ध स्रोत। • विभिन्न राजवंशों और उनके पदानुक्रम का कालक्रम प्रदान करते हैं।
महाकाव्य	• ब्राह्मण ग्रंथों का एक हिस्सा • सबसे महत्वपूर्ण- महाभारत और रामायण। • रामायण - वाल्मीकि द्वारा - मौर्य काल के बाद। • महाभारत - वेद व्यास द्वारा - गुप्त काल में पूर्ण - शुरू में, जय संहिता / भारत के रूप में नामित।
बौद्ध साहित्य	• पिटक - सबसे पुराने बौद्ध ग्रंथ। • भगवान बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद संकलित। • 3 प्रकार - • सुत्त पिटक- धार्मिक विचारधारा और बुद्ध की बातें शामिल हैं। • विनय पिटक- बौद्ध संघ के नियमों से मिलकर बना है। • अभिधम्म पिटक- बौद्ध दर्शन से मिलकर बना है। • जातक कथाएँ - भगवान बुद्ध के पिछले जन्मों का उपाख्यान। • मिलिंदपन्हो - बौद्ध ग्रंथ - इससे हमें ग्रीक शासक मिनांडर और बौद्ध संत नागसेन के बीच हुए दार्शनिक संवाद के बारे में जानकारी मिलती है। • दिव्यवदान - चौथी शताब्दी ई. - विभिन्न शासकों के बारे में जानकारी। • आर्यमंजुश्रीमुलकल्प - बौद्ध दृष्टिकोण से गुप्त साम्राज्य के विभिन्न शासकों के बारे में जानकारी। • अंगुतरनिकाय - इसमें सोलह महाजनपदों के नाम मिलते हैं।

सिंहली ग्रंथ	• दीपवंश और महावंश से युक्त - बौद्ध ग्रंथ। • दीपवंश - चौथी शताब्दी ई. । • महावंश - 5वीं शताब्दी ई. । • उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करते है। • भारत और विदेशों के सांस्कृतिक संबंधों का ज्ञान।
जैन ग्रंथ	• मुख्य ग्रंथ- आगम ग्रंथ (संख्या में कुल 12) । • आचारंगसूत्र - आगम का भाग - महावीर की शिक्षाओं पर आधारित है और जैन संतों के आचरण के बारे में जानकारी प्रदान करता है। • व्यख्याप्रजापति उर्फ भगवती सूत्र - महावीर का जीवन। नयधम्मक - भगवान महावीर की शिक्षाओं का संकलन। • भगवती सूत्र - 16 महाजनपदों के बारे में जानकारी। • भद्रबाहु चरित - जैन आचार्य भद्रबाहु और चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन पर प्रकाश डालता है। • परिशिष्टपर्वण - सबसे महत्वपूर्ण जैन ग्रन्थ - 12वीं शताब्दी ई. में हेमचंद्र द्वारा लिखित।

2. **गैर-धार्मिक ग्रंथ** -
   - समाज के लगभग सभी पहलुओं पर प्रकाश डालता है।
   - पाणिनि द्वारा अष्टाध्यायी - भारत का सबसे पुराना व्याकरण/साहित्य - मौर्य-पूर्व काल की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति की जानकारी।
   - मुद्राराक्षस- विशाखदत्त द्वारा रचित - मौर्य काल के बारे में जानकारी।
   - अर्थशास्त्र - कौटिल्य / विष्णुगुप्त / चाणक्य द्वारा रचित - 15 भागों में विभाजित - भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, मौर्य युग की स्थिति के बारे में जानकारी।
   - पतंजलि का महाभाष्य और कालिदास द्वारा रचित मालविकाग्निमित्रम – 'शुंग वंश' के बारे में जानकारी।
   - वात्स्यायन का कामसूत्र - सामाजिक जीवन, शारीरिक संबंध, पारिवारिक जीवन आदि की जानकारी।
   - शूद्रक द्वारा रचित 'मृच्छकटिकम्' और दण्डिन द्वारा रचित 'दशकुमारचरित' - उस काल के सामाजिक जीवन की जानकारी।
3. **संगम साहित्य** -
   - प्राचीनतम दक्षिण भारतीय साहित्य।
   - डेल्टाई तमिलनाडु में रहने वाले लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के बारे में जानकारी

संगम साहित्य और उनके लेखक	लेखक	विषय/प्रकृति/संकेत
अगत्तियम	अगस्त्य	अक्षरों के व्याकरण पर एक रचना।
तोलकाप्पियम (तमिल व्याकरण)	तोलकापिय्यार	व्याकरण और कविता पर एक ग्रंथ।
एट्टुटोगाई (8 संकलन)		मेलकन्नाक्कू का संयुक्त रूप।
पट्टू पट्टू		मेलकन्नाक्कू का संयुक्त रूप।
पटिनेंकिलकनाक्कू (18 छोटे काम)		एक उपदेशात्मक रचना।
कुरल (मुप्पल)	तिरुवल्लुवर	राजनीति, नैतिकता, सामाजिक मानदंडों पर एक ग्रंथ।
शिलप्पादिकारम	इलांगो अडिग	कोवलन समधवी की एक प्रेम कहानी
मणिमेकलै	सित्तलाई सत्तानार	मणिमेकलाई के साहसिक कारनामे

शिवगा सिंदामणि	तिरुत्तकदेवर	एक संस्कृत ग्रंथ
भरतम	पेरुदेवनार	अंतिम महाकाव्य
पन्निरुपडलम (व्याकरण)	अगस्त्य के 12 शिष्य	पुरम साहित्य पर एक व्याकरणिक कृति
कक्कीपादिन्यम (प्रोसोडी)		छंद-विद्या पर एक रचना

4. विदेशी विवरण

- ग्रीक, रोमन, चीनी और अरब यात्रियों के विवरण।

हेरोडोटस	• विश्व के प्रथम इतिहासकार माने जाते हैं। • फारसियों की तरफ से लड़ने वाले भारतीय सैनिकों का उल्लेख किया।
मेगस्थनीज	• सेल्यूकस निकेटर के राजदूत, चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में उपस्थित। • कार्य - इंडिका - पाटलिपुत्र के बारे में विवरण देता है। • सामाजिक संरचना, जाति-व्यवस्था, जाति-संबंध आदि का वर्णन मिलता है। • मूल इंडिका खो गई है।
पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी	• माना जाता है कि इसे मिस्र के तट पर एक मछुआरे ने लिखा था। • प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के दौरान भारत-रोमन व्यापार पर निष्पक्ष और वस्तुपरक जानकारी देता है। • भारत की तट-रेखा पर स्थित बंदरगाहों, भारत में व्यापार केंद्रों, व्यापार-मार्गों-व्यापार केंद्रों और बंदरगाहों को जोड़ने, केंद्रों के बीच की दूरी, व्यापार की वस्तुओं, व्यापार की वार्षिक मात्रा, जहाजों के प्रकार आदि के बारे में सूचना प्रदान करता है।
फाह्यान (Fa Xian)	• गुप्त काल के दौरान भारत का दौरा किया। • बौद्ध भिक्षु, देवभूमि (अर्थात भारत) से ज्ञान प्राप्त करने और बौद्ध तीर्थ केंद्रों का दौरा करने के लिए भारत का दौरा किया।
ह्वेनसांग (Xuan Zang)	• हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया। • बौद्ध तीर्थ स्थलों का भ्रमण किया, नालंदा विश्वविद्यालय में ठहरे। • बौद्ध धर्म का अध्ययन किया, मूल बौद्ध रचनाएँ पढ़ीं, मूल पांडुलिपियाँ और स्मृति चिन्ह एकत्र किए, प्रतियाँ बनाई, हर्ष की सभा में भाग लिया। • चीन में, उन्होंने 'सी-यू-की' (पश्चिमी क्षेत्रों पर रिकॉर्ड्स) लिखा - भारत में उन्होंने जो कुछ देखा, उसका विशद विवरण किया। • इसके विवरण से राजाओं विशेष रूप से हर्ष और उनकी उदारता, भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों और रीति-रिवाजों, जीवन शैली आदि की जानकारी मिलती है।

बिहार के इतिहास के स्रोत

बिहार के स्त्रोत

बिहार इतिहास के स्त्रोत

- पुरातात्विक साक्ष्य
- पुरापाषण काल (मुंगेर और नालंदा)
- मध्य पाषण काल (हजारीबाग, राँची, सिंहभूम और संथाल परगना)
- नवपाषण काल (सारण में चिरांद और वैशाली में चेचर)
- कुम्हार (पाटन) में अस्सी स्तंभों वाले हॉल के खंडर
- लौरिया नंदनगढ, रामपुरवा (पश्चिम चंपारण) में मोर्य का स्तंभ शिलालेख
- वैशाली में मिली गुप्त काल की मुहरें और सिक्के

साहित्यिक स्त्रोत

- शतपथ ब्राह्मण गंगा के अलावा उस आर्य सभ्यता को संदर्भित करता हैं।
- अथर्ववेद और पंचविश ब्राह्मण ने प्राचीन बिहार में भटकते तपस्वी को वर्त्य कहा था।
- ऋग्वेद में इस क्षेत्र के अछुत लोगों को किकत कहा गया हैं।
- पुराण, रामायण और महाभारत
- अभिधम्म पिटक, विनयपिटक, सुत्तपिटकअ जैसे बोद्ध साहित्य।
- अंगुतार निकाय ने महाजनपद के बारे में उल्लेख किया हैं।
- दिघ निकाय, दीपवंश और महावंश
- भद्रबहू के कल्पसूत्र, परिशिष्ठ वर्ण और वासुदेवचरित जैसे जैन साहित्य चन्द्रगुप्त मोर्य के प्रारम्भिक इतिहास के बारे में बताते हैं।
- मेगास्थनीज ने चन्द्रगुप्त मोर्य के दरबार में भारत का दौरा किया।
- 5 वीं शताब्दी ई. के दौरान आए फा –फेन मगध के बारे में बात करते हैं।
- ह्वेनसांग 637 ईस्वी में राजा हर्ष के दरबार में आया और नालंदा में महान मठ का उल्लेख किया ।
- I-tsing, एक चीनी यात्री जो नालंदा और उसके पडोसी के बारे में वर्णन करता है ।

2
CHAPTER

पाषाण युग

- प्रागैतिहासिक काल - कोई लिखित प्रमाण नहीं।
- सूचना का मुख्य स्रोत- पुरातात्विक उत्खनन।
- पल्लवरम हैंडैक्स - भारत में पहला पुरापाषाण उपकरण - रॉबर्ट ब्रूस फूट (1863 ईस्वी) द्वारा खोजा गया - दक्षिण भारत में बड़ी संख्या में पूर्व-ऐतिहासिक स्थलों की भी खोज की गई ।
- भूवैज्ञानिक युग, पत्थर के औजारों के प्रकार और तकनीक और निर्वाह के आधार पर भारतीय पाषाण युग को विभाजित किया गया है-
  - **पुरापाषाण युग**: अवधि - 500,000 - 10,000 ईसा पूर्व।
  - **मध्यपाषाण काल**: अवधि - 10,000 - 6000 ईसा पूर्व।
  - **नवपाषाण युग**: अवधि - 6000 - 1000 ईसा पूर्व।

पुरापाषाण युग काल

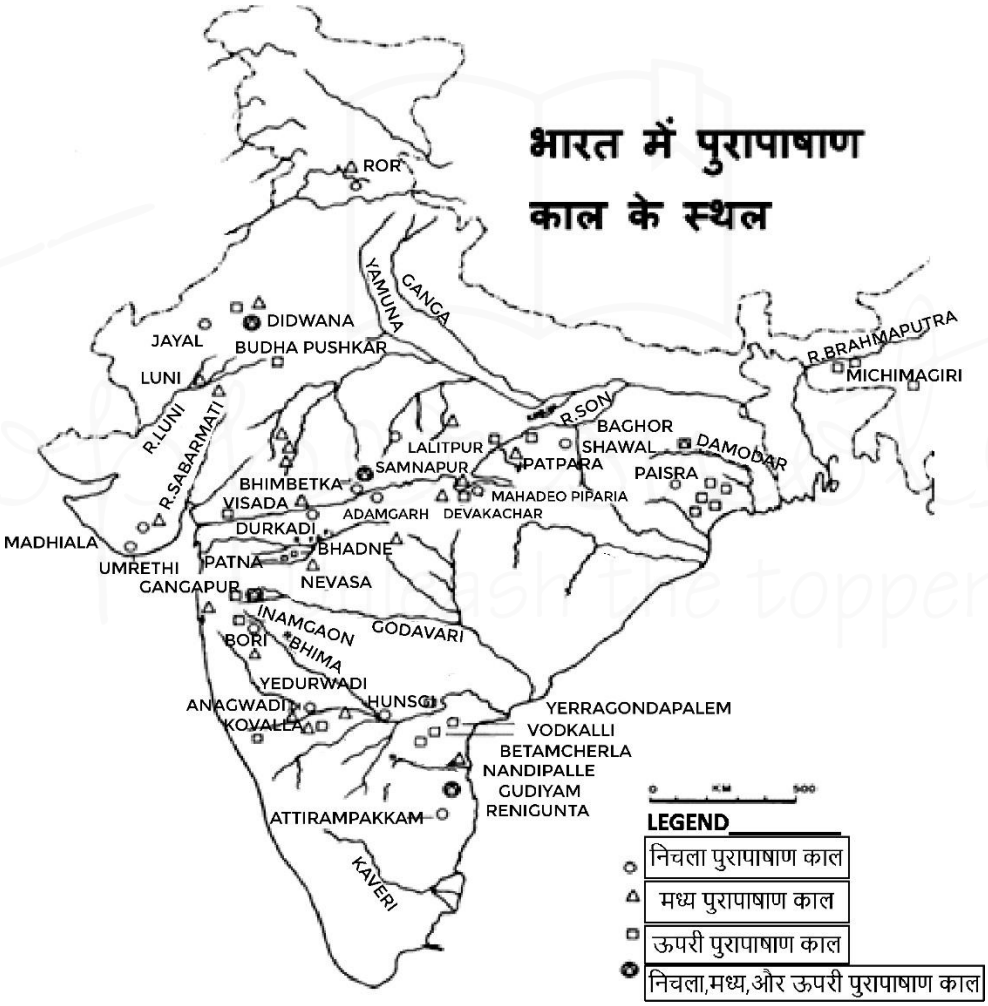

पुरापाषाण काल

	निम्न	मध्य	उच्च
अवधि (अनुमानित)	5,00,000 ईसा पूर्व से 40,000 ईसा पूर्व	40,000 ईसा पूर्व से 23,000 ईसा पूर्व	23,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व
व्यवसाय	शिकार, मछली पकड़ना, भोजन एकत्र करना	शिकार, मछली पकड़ना, भोजन एकत्र करना	शिकार, मछली पकड़ना, भोजन एकत्र करना

औजार	चॉपर/क्लीवर, हैंड-एक्स	ब्लेड, छेदक (छिद्र करने के लिए), बिंदु (छिद्र करने के लिए), खुरचनी	ब्लेड , खुरचनी (छिपाने के लिए), खोदनी (छेदने, नक्काशी के लिए)
पत्थरों के रूप	कंकड़	फ्लेक्स	चकमक पत्थर (क्वार्ट्ज और चर्ट का रूप)
सामग्री	क्वार्टजाइट	क्वार्टजाइट	चर्ट और जैस्पर, अस्थि उपकरण
वस्त्र	पेड़ की छाल, पत्ते	पेड़ की छाल, पत्ते	पेड़ की छाल, पत्ते
शरण स्थल	गुफाएं और रॉक-आश्रय	गुफाएँ और चट्टान-आश्रय	गुफाएँ और रॉक-आश्रय
अन्य विशेषताएँ	कोई कृषि नहीं, कोई आग नहीं, पहिये की खोज नही	कोई कृषि नहीं, कोई आग नहीं, पहिये की खोज नहीं	कोई कृषि नहीं आग (संभवतः) पहिये का आविष्कार नहीं गुफा चित्रकला

मध्य पाषाण काल

- ग्रीक शब्दों 'मेसो' और' लिथिक से व्युत्पन्न अर्थात 'मध्य पाषाण युग'।
- होलोसीन युग से सम्बंधित थे।

पुरापाषण काल और नवपाषाण काल अर्थात उत्तरपाषाण युग के बीच संक्रमणकालीन अवधि।

विशेषताएँ

- शुरू में शिकारी और संग्रहण कर के जीवनयापन करते थे, लेकिन बाद में जानवरों को पालतू बनाना और खेती करना शुरू किया।
- आदिम खेती, और बागवानी की शुरुआत।
- पालतू बनाए जाने वाला पहला जानवर - कुत्ते का जंगली पूर्वज।
- भेड़ और बकरियाँ- सबसे आम पालतू जानवर।
- गुफाओं और खुले मैदानों को अधिकृत करके अर्ध-स्थायी बस्तियों में रहते थे।
- परलोक में विश्वास करते थे और इसलिए मृतक के साथ खाद्य पदार्थों और अन्य सामानों को दफन किया जाता था।
- लोग जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनने लगे।
- इस अवधि के दौरान गंगा के मैदानों में पहली बार मानव का बसना।
- अंतिम चरण - खेती की शुरुआत।

उपकरण - माइक्रोलिथ्स

- ज्यामितीय और गैर-ज्यामितीय आकृतियों में क्रिप्टो-क्रिस्टलीय सिलिका, स्फटिक या चर्ट से बने उपकरण।
- मिश्रित उपकरण, भाला, तीर और दराँती बनाने के लिए उपयोग किए जाते थे।
- छोटे जानवरों और पक्षियों का शिकार करने में सक्षम।

चित्र

- प्रागैतिहासिक काल में कला प्रेम और आरंभिक रॉक कला।
- भारत में पहली रॉक पेंटिंग- 1867 में सोहागीघाट (UP) से प्राप्त हुई।
- विषयवस्तु - जंगली जानवर और शिकार के दृश्य, नृत्य और भोजन संग्रह।
- पेंटिंग ज्यादातर लाल गेरू से निर्मित लेकिन कभी-कभी नीले-हरे, पीले या सफेद रंगों का इस्तेमाल किया गया।
- मध्यपाषाणकालीन शैल कला स्थल -
  - मध्य भारत - भीमबेटका गुफाएँ, खारवार, जावरा और कठोतिया (म.प्र.), सुंदरगढ़।
  - संबलपुर (ओडिशा)।
  - एजुथु गुहा (केरल)।

महत्वपूर्ण मध्यपाषाण स्थल

स्थल	प्रमुख निष्कर्ष
बागोर (राजस्थान)	• भारत में सबसे बड़ी और सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित मेसोलिथिक साइटों में से एक। • कोठारी नदी पर स्थित। • जानवरों को पालतू बनाने के सबसे पुराने साक्ष्य।

महादहा, दमदमा, सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश)	• मानव कंकाल के साक्ष्य। • संयुक्त कब्रगाह। • एक कब्रगाह में एक हाथीदांत का पेंडेंट प्राप्त हुआ।
लंघनाज (गुजरात) और बिहारनपुर (पश्चिम बंगाल)	• लंघनाज- जंगली जानवरों (गैंडा, काला हिरण, आदि) की हड्डियाँ। • कई मानव कंकाल।
	• बड़ी संख्या में माइक्रोलिथ्स(लघु पाषाण उपकरण) की प्राप्ति।

नवपाषाण काल

- ग्रीक शब्द: नियो = नया और लिथिक = पत्थर से मिलकर बना।
- यह शब्द 1865 में सर जॉन लुबॉक द्वारा गढ़ा गया।

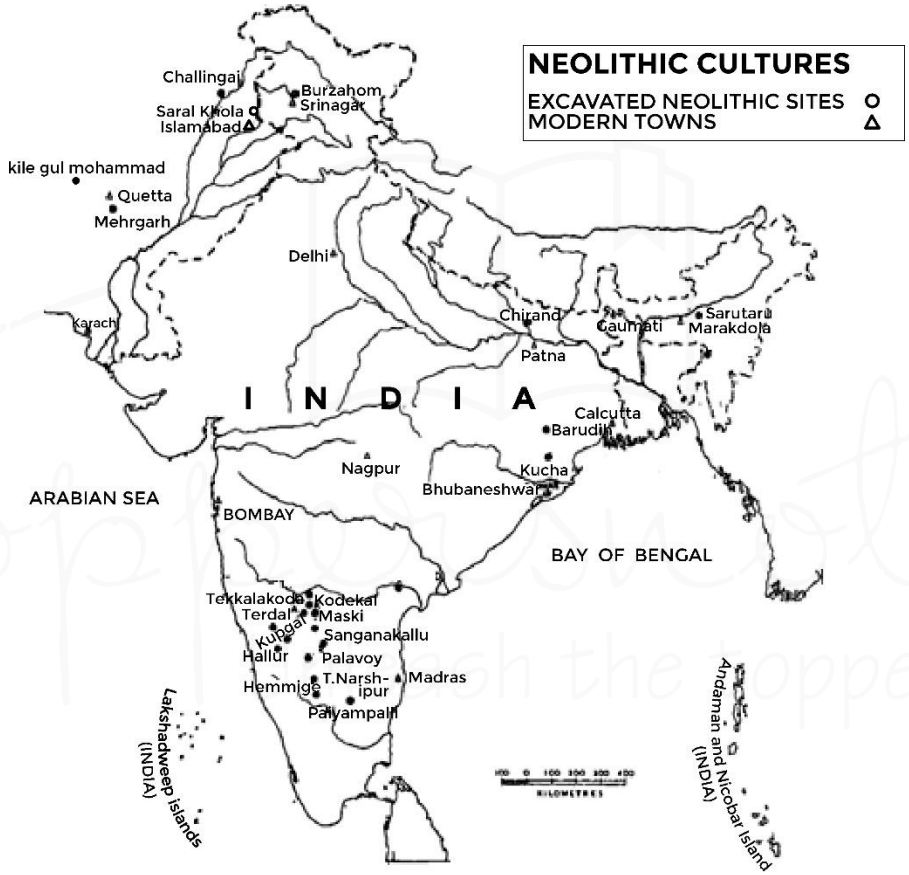

- **विशेषताएँ**
  - होलोसीन भूवैज्ञानिक युग के अंतर्गत आता है।
  - 'नियोलिथिक क्रांति' (V गॉर्डन चाइल्ड द्वारा) क्योंकि इसने मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक जीवन में बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन किए।
  - इस काल में आदमी खाद्य संग्रहकर्ता से खाद्य उत्पादक बन गया।
- उपकरण और हथियार।
  - पॉलिश, नुकीले और ग्राउंड स्टोन उपकरण।
- कृषि
  - फल और रागी और चना (कुलथी) जैसे अनाज उगाते थे।
  - साथ ही मवेशी, भेड़ और बकरियों को पालतू बनाया।
- मृद्भाण्ड -
  - सबसे प्राचीन हाथ से बने मिट्टी के बर्तन के अवशेष और बाद में चाक का उपयोग शुरू हुआ।
  - ग्रे वेयर, काले पॉलिशड मृद्भांड और मैट इंप्रेस्ड मृद्भांड प्राप्त हुए।
- आवास और स्थायी जीवन -
  - लोग मिट्टी और बाँस से बने आयताकार या गोलाकार घरों में रहते थे।
  - यहाँ के लोग नाव का निर्माण और कपास, ऊन और कपड़े की बुनाई करना जानते थे।
  - मुख्य रूप से पहाड़ी नदी घाटियों, शैल आश्रयों और पहाड़ी ढलानों में निवास करते थे।

महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल

- कोल्डीहवा (इलाहाबाद के दक्षिण में स्थित)- कच्चे हाथ से बने मिट्टी के बर्तनों के साथ गोलाकार झोपड़ियों के साक्ष्य मिलते हैं।
- महगडा - विश्व में चावल की खेती के सबसे प्राचीन प्रमाण प्राप्त हुए है
- मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) - सबसे पुराना नवपाषाण स्थल, जहाँ लोग धूप में सुखाई गई ईंटों से बने घरों में रहते थे और कपास और गेंहूँ जैसी फसलों की खेती करते थे।
- बुर्जहोम (कश्मीर) - घरेलू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ उनकी कब्रों में दफनाया जाता था, लोग गड्ढों(गड्ढे में बने घर) में रहते थे और पॉलिश किए गए पत्थरों और हड्डियों से बने औजारों का इस्तेमाल करते थे।
- गुफकराल (कश्मीर) - शाब्दिक अर्थ "कुम्हार की गुफा"। यह नवपाषाण स्थल गड्ढे में बने घरों में रहने, पत्थर के औजारों और कब्रिस्तानों के लिए प्रसिद्ध है।
- चिरांद (बिहार): सींगों से बने हड्डी के औजार।
- नेवासा - सूती कपड़े के साक्ष्य।
- पिकलीहल, ब्रह्मगिरि, मस्की, टक्कलकोटा, हल्लूर (कर्नाटक) - राख के टीले की खोज।

ताम्रपाषाण काल (3500 ई.पू.-1000 ई.पू.)

- नवपाषाण काल का अंत - लोगों ने धातुओं का उपयोग करना शुरू कर दिया।
- सर्वप्रथम प्रयुक्त धातु - ताँबा।

ताँबा + निम्न-श्रेणी का कांस्य + पत्थर के औजार = ताम्रपाषाण काल/पाषाण-तांबे के औजारों का काल

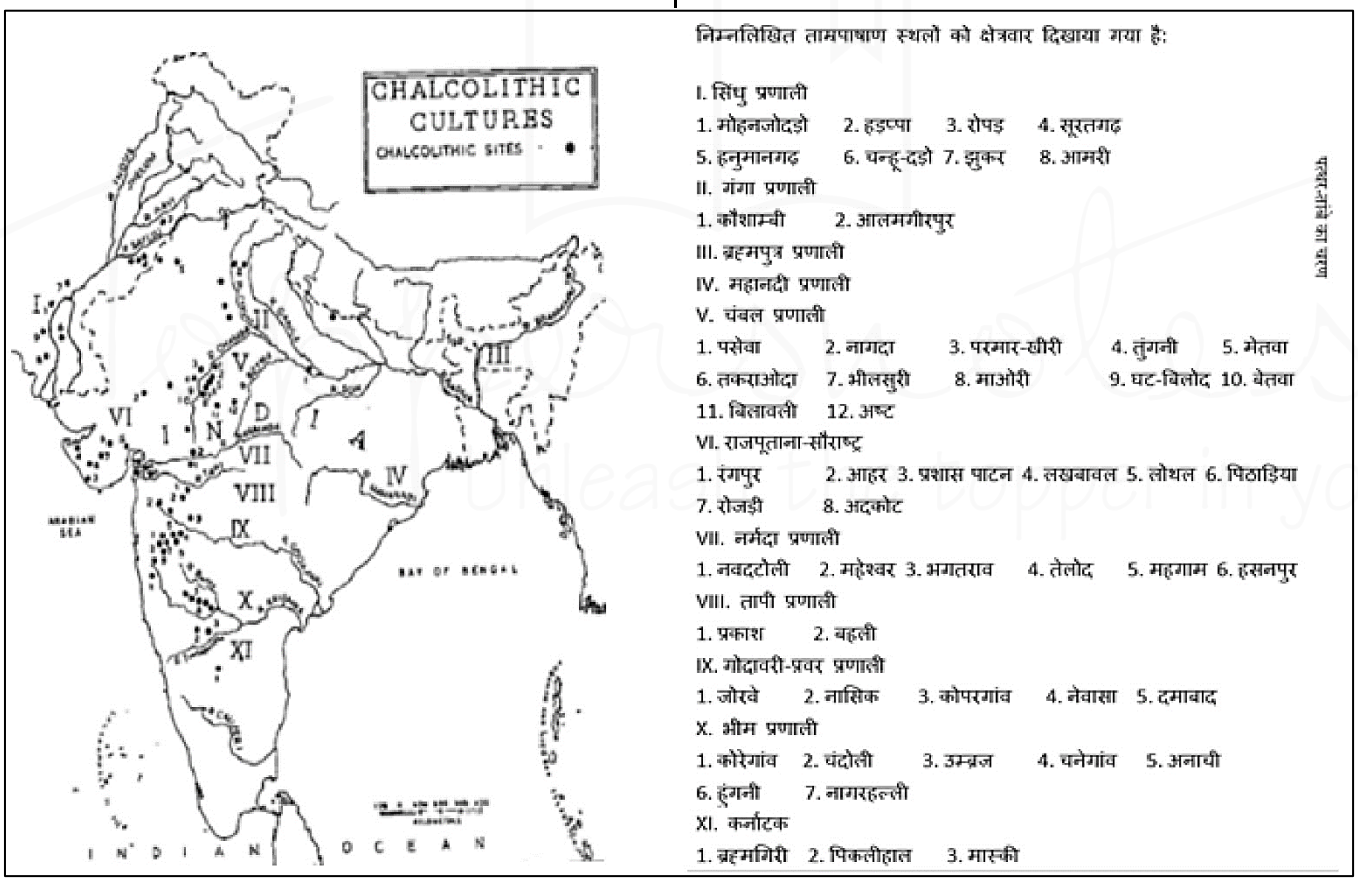

विशेषताएँ

- प्राक्-हड़प्पा चरण, हालाँकि, हड़प्पा चरण के बाद देश के कुछ हिस्सों में ताम्रपाषाण संस्कृति के साक्ष्य मिले है।
- मुख्य आहार - मछली और चावल।
- पकी ईंटों का उपयोग नहीं किया जाता था।
- घर- मिट्टी और बांस से बने गोलाकार या आयताकार मकान।
- सोने का उपयोग केवल अलंकरण के उद्देश्यों से किया गया।
- कपास का उत्पादन दक्कन क्षेत्र में होता था।
- लोग बुनाई, कताई और ताँबा गलाने का कार्य करते थे।
- ताम्रपाषाण बस्तियों के साक्ष्य -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान।
  - पश्चिमी मध्य प्रदेश।
  - पश्चिमी महाराष्ट्र।
  - दक्षिण और पूर्वी भारत।
- पत्थरों से बने छोटे औजारों और हथियारों का प्रयोग- पत्थर के ब्लेड और ब्लेडलेट।
- ब्लैक एंड रेडवेयर (BRW) का उपयोग।

महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण संस्कृति और उनकी विशेषताएँ

संस्कृति	अवधि	विशेषताएँ	स्थल
आहड़ संस्कृति	2100-1500 ईसा पूर्व	• सफेद डिजाइन वाले विशिष्ट काले और लाल मृद्भांड • उगाई जाने वाली फसलें- चावल, ज्वार, बाजरा, कुलथी, रागी, हरी मटर, मसूर, हरे और काले चने। • पत्थरों से बने घर	• क्षेत्रीय केंद्र- गिलुन्ड • महत्वपूर्ण स्थल- आहड़ और बालाथल
कायथा संस्कृति	2000-1880 ई.पू.	• भूरे रंग में डिजाइन वाले चित्रित मजबूत लाल पोलिश किये गए बर्तन • लाल रंग के पांडुभांड • उकेरे गए पैटर्न वाले कोम्बड वेयर • किलेबंद बस्तियाँ	• चंबल और उसकी सहायक नदियाँ
मालवा संस्कृति	1700-1200 ई.पू.	• काले और लाल रंग में डिज़ाइन वाली मोटी बफ़र सतह वाले बर्तन। • उगाई जाने वाली फसलें- गेहूँ और जौ	• नवदाटोली, एरण और नागदा - महत्वपूर्ण बस्तियाँ • नवदाटोली - सबसे बड़ी बस्ती
सावल्दा संस्कृति	2300-2000 ई.पू.	• दक्कन में सबसे प्रारंभिक कृषक समुदाय	• महाराष्ट्र में धुले जिला
जोर्वे संस्कृति	1400-700 ई.पू.	• लाल रंग की सतह पर काले रंग में चित्रित मृद्भांड	• तापी, गोदावरी और भीमा नदी की घाटियाँ • दैमाबाद - सबसे बड़ी बस्ती
प्रभास और रंगपुर संस्कृति	2000-1400 ई.पू.	• पॉलिश किए गए लाल मृद्भांड	

अन्य ताम्रपाषाण स्थल

1. पूर्वी उत्तर प्रदेश
   - खैराडीह
2. दक्षिण-पूर्वी राजस्थान
   - गणेश्वर- पूर्व-हड़प्पा ताम्रपाषाण संस्कृति को दर्शाता है।
   - आहड- ताँबे के औजारों की बहुतायत, पत्थर की कुल्हाड़ी या ब्लेड की अनुपस्थिति, प्रगलन और धातु विज्ञान का अभ्यास किया जाता था।
3. पश्चिम बंगाल (चावल के दानों के साक्ष्य)
   - महिषादल
   - पांडु राजार धिबिक
4. पश्चिमी मध्य प्रदेश (गेंहूँ और जौ का उत्पादन)।
   - मालवा- सबसे उत्कृष्ट ताम्रपाषाण मिट्टी के पात्र यहाँ खोजे गए हैं।
   - कायथा- 29 ताँबे की चूड़ियों और दो अनोखी कुल्हाड़ियों की खोज, कारेलियन और स्टीटाइट जैसे अर्ध-कीमती पत्थरों के हार।
   - एरण- गैर-हड़प्पा संस्कृति को दर्शाता है।
5. पश्चिमी महाराष्ट्र
   - जोर्वे- सपाट, आयताकार ताँबे की कुल्हाड़ियों का प्रमाण।
   - दैमाबाद- सबसे बड़ा जोर्वे सांस्कृतिक स्थल (20 हेक्टेयर), कांस्य वस्तुएँ।
   - चंदोली- तांबे की छेनी।
   - इनामगाँव- चावल के साक्ष्य, मातृदेवी की मूर्तियाँ, बड़े मिट्टी के घर जिसमें चूल्हे थे और गोलाकार गड्ढे वाले घर।
   - नवदाटोली- बियर और अलसी के प्रमाण।
6. बिहार
   - नरहन।
   - चिरांद (मछली के काँटे के प्रमाण)।

बिहार में प्रागितिहास

- बिहार में मेसोलिथिक मानव निवास के प्रमाण हैं।
- प्रागैतिहासिक शैल चित्रों की खोज बिहार के कैमूर, नवादा और जमुई क्षेत्र से हुई।
  - वे उस समय के लोगों की जीवन शैली को दर्शाते हैं।
  - मानव गतिविधियों जैसे नाचना, शिकार करना, घूमना आदि के बारे में जानकारी देना।

    - वे मध्य और दक्षिणी भारत और यूरोप और अफ्रीका में पाए गए चित्रों के समान हैं।
        - स्पेन के अल्ता मीरा और फ्रांस के लास्कॉक्स के रॉक पेंटिंग बिहार से खोजे गए चित्रों के साथ कुछ सामान्य विशेषताएँ साझा करते हैं।
- नवपाषाणकालीन बस्ती के साक्ष्य: बिहार के चिरांद क्षेत्र में खोजे गए।
- मेसोलिथिक निवास के साक्ष्य - पैसरा (मुंगेर) ।

बिहार में नवपाषाणकालीन साक्ष्य

चिरान्द

- यह बिहार के सारण जिले में एक पुरातात्विक स्थल है।
- स्थान - गंगा नदी का उत्तरी तट।
- इसका एक बड़ा प्रागैतिहासिक टीला है।
    - नवपाषाण युग (लगभग 2500-1345 ईसा पूर्व) से पाल वंश, जिन्होंने पूर्व-मध्य काल के दौरान शासन किया था, के शासनकाल तक अपने निरंतर पुरातात्विक रिकॉर्ड के लिए जाना जाता है।
- उत्खनन से स्तरीकृत नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग की बस्तियों और 2500 ईसा पूर्व से 30 ईस्वी तक के मानव निवास पैटर्न के साक्ष्य मिले।
- चिरांद नवपाषाण समूह ने मैदानी इलाकों पर कब्जा कर लिया, जबकि उनके समकालीन लोग पठारों और पहाड़ियों पर बसे हुए थे।
- यहाँ व्यावसायिक वर्गीकरण में तीन अवधियाँ शामिल हैं -
    - अवधि । नवपाषाण (2500-1345 ईसा पूर्व)।
    - अवधि ॥ ताम्रपाषाण काल (1600 ई.पू.) ।
    - अवधि ।।। लौह युग।
- नवपाषाण काल की शीर्ष परत की कार्बन डेटिंग 1910 ईसा पूर्व और 1600 ईसा पूर्व के बीच की है।
    - खोजा गया निम्नतम स्तर 200 ईसा पूर्व का है।
- अर्थव्यवस्था
    - इसमें शिकार,संग्रहण, मछली पकड़ना और पशु पालन करना शामिल था।
    - कुछ बर्तनों में मिले धान की भूसी के साक्ष्यों से चावल और अनाज जैसे गेंहूँ, मूँग, मसूर और जौ की खेती में शामिल होने के बारे में जानकारी मिलती हैं।
    - कृषि और जंगली चावल दोनों की कटाई गर्मियों के दौरान और फिर से सर्दियों के दौरान की जाती थी।

प्रमुख निष्कर्ष

- पुरातात्विक खोज 3.5 मीटर (11 फीट) मोटाई के एक नवपाषाण निक्षेप, 5.5 मीटर (18 फीट) मोटी एक ताम्रपाषाण परत और 2.45 मीटर (8 फीट 0 इंच) मोटाई के लौह युग के निक्षेपों से की गई हैं।
- मृद्भांड
    - चिरांद से उत्खनित 25,000 बर्तनों को अवधि ॥ के नवपाषाण मिट्टी के बर्तनों के अनुसार वर्गीकृत किया

    गया है, जो अवधि 1 के मिट्टी के बर्तनों की तुलना में अधिक परिष्कृत दिखाई देते हैं, सभी अभ्रक के साथ मिश्रित चिकनी मिट्टी से बने है।
    - अधिकांश मिट्टी के बर्तन हाथ से बनाए जाते थे।
    - कुछ बर्तन टर्न टेबल या डबिंग द्वारा बनाए गए थे।
    - आधे बर्तन लाल बर्तन हैं और आधे काले और लाल बर्तन हैं।
- औजार
    - सेल्ट के नवपाषाणकालीन पत्थर के औजार पाए गए।
    - प्राप्त की गई कुल्हाड़ियाँ क्वार्टजाइट, बेसाल्ट और ग्रेनाइट से बनी थी।
    - खोज में नौ प्रकार के माइक्रोलिथ प्राप्त हुए।
    - प्राप्त किए गए वेस्ट फ्लेक्स, क्षेत्र में एक अच्छी तरह से स्थापित माइक्रोलिथिक उद्योग में निर्माण की प्रक्रिया के प्रसार को इंगित करते हैं जिसमें सोन नदी के सूखे तल से प्राप्त चर्ट, कैल्सेडनी, एगेट और जैस्पर का उपयोग शामिल हैं।
    - लंबे, बेलनाकार और त्रिकोणीय आकार में पत्थर की डिस्क की खोज की गई थी।

सामाजिक जीवन

- नवपाषाण काल के लोग वृत्ताकार लकड़ी और मिट्टी और बाँस से बनी झोपड़ियों में रहते थे।
- एक अर्धवृत्ताकार झोपड़ी में चूल्हे और तिरछे आकार के तंदूर पाए गए।
- चूल्हे और तंदूर के चारों ओर मिट्टी के सफेद रंग से तंदूर में भुने हुए जानवरों के माँस के साक्ष्य मिलते हैं।
- चावल मुख्य भोजन था।
- घरों चारदीवारी मिट्टी की थी।
- जले हुए निशान वाली मिट्टी के टुकड़ों, ईख या बांस से पता चलता है कि घर आग से नष्ट हो गए थे।

ताम्रपाषाण युग

- नवपाषाण काल का अंत - लोगों ने धातुओं का उपयोग करना शुरू कर दिया।
- सर्वप्रथम प्रयुक्त धातु - ताँबा।

ताँबा + निम्न-श्रेणी का कांस्य + पत्थर के औजार = ताम्रपाषाण काल/पत्थर-ताँबा चरण

- सामाजिक असमानताओं के साथ-साथ ग्रामीण समुदाय के उद्भव के साक्ष्य मिले।

विशेषताएँ

- पूर्व-हड़प्पा चरण, हालाँकि, हड़प्पा चरण के बाद देश के कुछ हिस्सों में ताम्रपाषाण संस्कृति देखी गई।
- मुख्य आहार - मछली और चावल।
- पकी ईंटों का उपयोग नहीं किया जाता था।
- मकान- मिट्टी और घांस-फूंस से बने और गोलाकार या आयताकार घर।
- सोने का उपयोग केवल अलंकरण के उद्देश्यों के लिए।
- कपास का उत्पादन दक्कन क्षेत्र में होता था।
- लोग बुनाई, कताई और ताँबा गलाने का कार्य करते थे।
- ताम्रपाषाण बस्तियों के साक्ष्य -
    - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान।
    - पश्चिमी मध्य प्रदेश।
    - पश्चिमी महाराष्ट्र।
    - दक्षिण और पूर्वी भारत
- पत्थरों से बने छोटे औजारों और हथियारों का प्रयोग- पत्थर के ब्लेड और ब्लेडलेट।
- काले और लाल मृदभांडों (BRW) का उपयोग।

बिहार में ताम्रपाषाण स्थल

- नरहन
- चिरांदो
    - घर - गोलाकार घर।
    - कृषि - चावल+ मछली पकड़ने के काँटे

मुख्य निष्कर्ष

- प्रागैतिहासिक शैल चित्रों की खोज बिहार के कैमूर, नवादा और जमुई क्षेत्र से हुई।
- मध्यपाषाण निवास - पैसरा (मुंगेर)।
- चिरांदो से बिहार में नवपाषाणकालीन साक्ष्य
    - नवपाषाण युग से पाल वंश के शासनकाल तक अपने निरंतर पुरातात्विक रिकॉर्ड के लिए जाना जाता है।
- **बिहार में ताम्रपाषाण स्थल**
    - नरहनी
    - चिरान्दो
        - बंदोबस्त - पोस्ट-होल और गोल घर।
        - कृषि - चाँवल + मछली हुक

3
CHAPTER

सिंधु घाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज

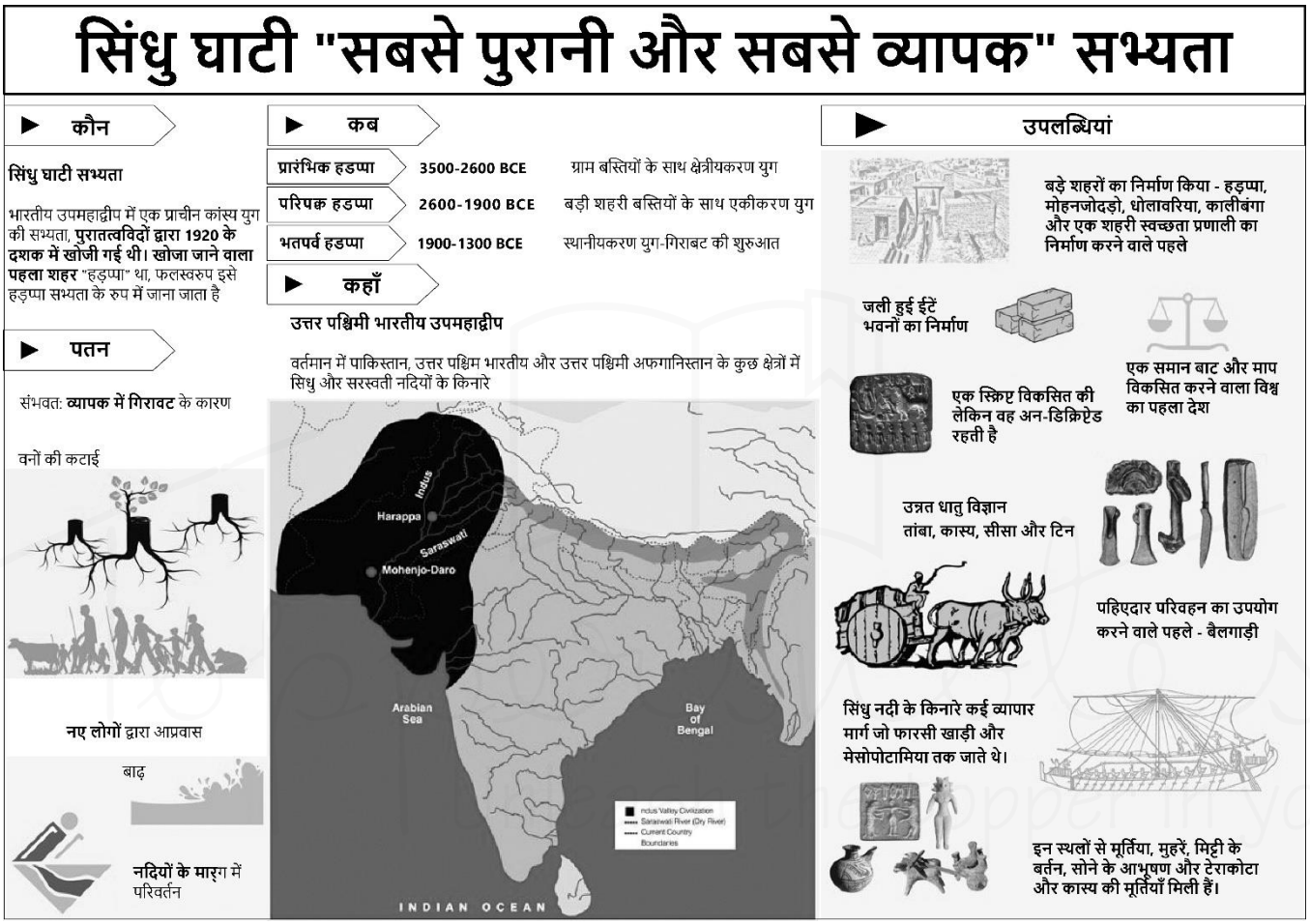

- दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता।
- मेसोपोटामिया और मिस्र की सभ्यताओं के समकालीन।
- भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में विकसित
- 1853 - A. कनिंघम द्वारा एक हड़प्पा मुहर की खोज जिसमें एक बैल दिखाया गया था।
- 1921 - दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की खोज (पहला पुरातात्विक स्थल खोजा गया)।
    - इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- 1922 - R. D. बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ो की खोज।
- नदी सभ्यता।
- कांस्य युग की सभ्यता।

भौगोलिक विस्तार

- आवृत्त क्षेत्र- लगभग 13 लाख वर्ग किमी. ।
- विस्तार- सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
- सबसे उत्तरी स्थल- जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)।
- सबसे दक्षिणी स्थल- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवरा)।
- सबसे पश्चिमी स्थल- बलूचिस्तान में सुत्कागेंडोर (नदी- दाश्क)।
- सबसे पूर्वी स्थल- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडन)।

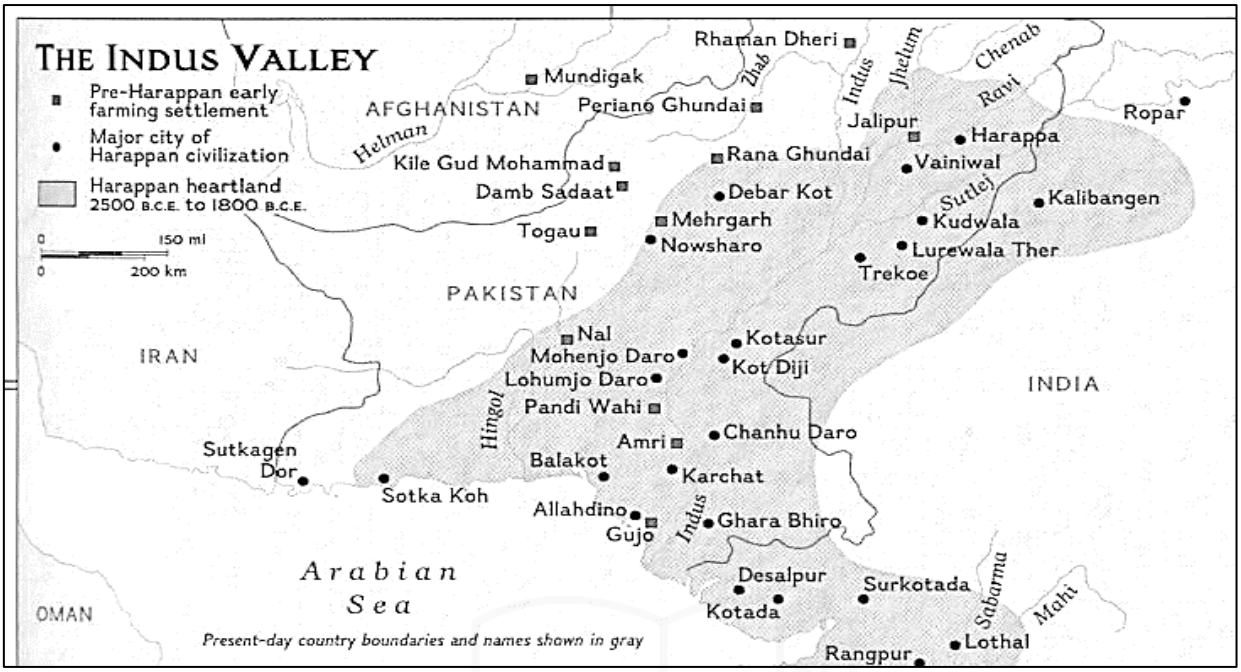

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड़प्पा (1921) पंजाब का मोंटगोमरी जिला। उर्फ अन्न भंडार का शहर।	रावी	• 6 अन्न भंडार की एक पंक्ति। • यहाँ R-37 और H कब्रिस्तान मिले है। • शवाधन के अवशेष। • लाल बलुआ पत्थर से बना नर धड़। • ताँबे की बैलगाड़ी। • लिंगम और योनि के पत्थर के प्रतीक। • मातृदेवी की टेराकोटा की मूर्तियाँ। • एकल कमरे के बैरक। • कांस्य बर्तन। • दुर्ग (शहर का ऊँचाई पर बना हिस्सा)। • पासा।
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला)- सिंधू का लरकाना जिला सबसे बड़ा सिंधु घटी स्थल	सिंधु	• विशाल स्नानागार (अनुष्ठान स्नान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, पकी हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर कोलतार का प्रयोग) • विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत)। • बुने हुए कपड़े का टुकड़ा। • नृत्यरत लड़की की कांस्य प्रतिमा- दाहिना हाथ कूल्हे पर और बायां हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। • सूती कपड़ा। • एक समान इमारते और माप-तौल। • मातृदेवी की मुहर। • योगी की मूर्ति। • पशुपति की मुहर। • दाढ़ी वाले आदमी की स्टीटाइट छवि। • मेसोपोटामिया की मुहरें। • नग्न महिला नर्तकी की कांस्य मूर्ति। • शहर की 7 परतें → अर्थात शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।